सनलाइट आफ इण्डिया

इन्स्योरेन्स कं० लि०

लाहौर

उन्नति के पथ पर

१९४५ का नया सम्पूर्ण कार्य रु० ८००,०००० से ऊ

व्यवस्थापक

आनरेबिल लाला भीमसेन सच्चर फाइनेन्स मिनिस्टर

पंजाब।

ऐसी राष्ट्रीय कम्पनी की एजेन्सी लेना आपको लाभप्रद

हमारे नये राष्ट्रपति

'आचार्य कृपलानी'

लेखक—

कौशल प्रसाद जैन

सोल एजेण्ट

जयभारत साहित्य मण्डल

नई सड़क, देहली।

—-:o:-—

प्रथम संस्करण } २१ नवम्बर १९४६ { मूल्य ।–)

प्रकाशक
इन्द्रप्रस्थ विद्यापीठ
देहली

मुद्रक
धारा प्रेस,
चर्खेवाल, देहली

हम क्या हैं

जयभारत साहित्य मण्डल की स्थापना हिन्दी में उच्च कोटि का सामायिक राष्ट्रीय और वीरतापूर्ण ऐतिहासिक साहित्य प्रकाशित करने के उद्देश्य से हुआ है। अपने जन्म के प्रारम्भिक दो महीने में ही यह संस्था सात आठ पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है यह संस्था का सातवाँ पुष्प है। आठवां, नवां, दसवाँ छप रहा है। हिन्दी में इस प्रकार के साहित्य की कितनी कमी थी इसका अन्दाजा इसी बात से लग सकता है कि हमारा एक एक संस्करण हाथों हाथ उठ गया है। हमारा विचार कम से कम तीन पुस्तकें प्रतिमास प्रकाशित करने का है अब तक निम्न पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और जो प्रेस में हैं उनके शीघ्र ही प्रकाशित हो जाने की आशा है।

१—छत्रपति शिवाजी—ले० पंजाब केसरी लाला लाजपतराय जी १॥)

(शेष पृष्ठ ४ पर)

दो शब्द

आज ~मारा राष्ट्र एक अजीब परिवर्तन युग में गुजर रहा है, गुलामी की बेड़ियां हम तोड़ चुके हैं और हथकड़ियाँ तोड़ने का प्रयत्न कर रहे हैं, केन्द्र में अन्तका. . . सरकार बन चुकी है उसे असफल करने में सारी प्रतिक्रिया वादी शक्ति या जोर लगा रही है, उसी का फल है कि देश के स्थान स्थान पर साम्प्रदायिक दंगे और भयङ्कर मारकाट होरही है ऐसे कठिन समय मे देश का नेतृत्व करना, जान बूझ कर मौत को गले लगाना है, यह सब जानते हुए भी कृपलानी जी ने यह भार स्वीकार किया है और चुनाव घोषित होते ही अपने साहस की परीक्षा देने पूर्वी बंगाल में अत्याचारियों द्वारा सताए हुए निरीह हन्दू कुटुम्बोंकी ओर सहायताके लिए दौड़ पड़े हैं

आम लोंगों को मन्दिर का शिखर और ताज में लगा हुआ हीरा ही दिखाई दिया करता है, पर कृपलानी जी न शिखर हैं और न मुकुट में जड़े हुए हीरे। वह तो मन्दिर। की नींव के वह पत्थर है जिनपर शिखर का निर्माण हुआ है वास्तव में ही कृपलानी जी नेता नहीं हैं वह तो कार कर्त्ता रहें हैं और कार्य कर्त्ता रहेंगे वह बोलते कम और करते अधिक हैं! आज भारत के नवयवकों को ऐसे ी

अादर्शों को अ १ यकता है जो बात की अपेक्षा काम अधिक करें। इसी आवश्यकता की पूर्ति स्वरूप यह छोटी सी पुस्तिका हर नेता के जीवन पर संकलित करने का विचार है। आगे ईश्वरेच्छा

—कौशल प्रशाद जैन

(पृष्ठ २ का शेष)

ऊंचा कद, छरहरा बदन, गेहुंआ रंग मध्य युग के योरुप के धर्म प्रवर्त्तकों जैसी वेशभूषा, हर समय मुस्कराता हुआ चेहरा और दूर तक देखने वाली आंखें देख कर कांग्रेस हाई कमांड में आप कहीं भी आचार्य कृपलानी को पहिचान सकते हैं तथा कहीं भी आचार्य कृपलानी का पता पूछकर इस हुलिये के दर्शन कर सकते हैं।

पिछले तीस वर्षों से आचार्य कृपलानी कॉंग्रेस हाई कमांड के किसी न किसी रूप में सदस्य रहे हैं। वह निर्भीक नेता भी हैं और अनुशासित सिपाही भी। एक ओर कांग्रेस के महामंत्री के नाते जहां उनकी आज्ञाएं कठोर-कर्त्तव्य पालन से भरी हुई होती हैं दूसरी ओर साधारण सिपाही की तरह वह प्रत्येक आज्ञा मानने को तैयार रहते हैं। कांग्रेस के पास वह उन सिपाहियों में से हैं जिन्हें विश्वास के साथ चाहे मोर्चे पर गोली छोड़ने

और गोली खाने को भेज दीजिये चाहे फौजों को जोश दिलाने के लिए मारू बाजा बजवाइये।

अपने जीवन के स्वतंत्रता युद्ध के पिछले तीस वर्षों में कांग्रेस ने बहुत से उतराव चढ़ाव देखे हैं संकटों और उपद्रवों की अनेक झंझावतें कांग्रेस के सामने आई हैं, कांग्रेस की डगमगाती नाव की पतवार, झंझावतों में जो लोग संभाले खड़े रहे उनमें आचार्य कृपलानी का नाम बहुत आगे है। कांग्रेस का महामंत्री पद तो उनके लिए रिजर्व सीट सा हो गया है, प्रत्येक व्यक्ति को कांग्रेस महामंत्री का नाम सामने आते ही गर्दन पर पड़े हुये लम्बे बालों वाली कृपलानी जी की शक्ल दिखाई देने लगती है। इस वर्ष कांग्रेस हाई कमांड ने उनकी राष्ट्रीय सेवाओं के उपलक्ष में जब उन्हें राष्ट्रपति बनाने का विचार किया और श्री डा० केसकर और श्रीमती मृदुला सारा भाई का नाम महा मंत्रित्व के रूप में सामने आया तो साधारण जनता आश्चर्य चकित रहगई, क्योंकि उन्हें विश्वास सा हो गया था कि कृपलानी जी के जीवन तक कांग्रेस का महामंत्री पद उनसे नहीं छूट सकता है। अब जब वह राष्ट्रपति चुने गये हैं तो जनता ने उनके महामंत्री पद से अलग होने की गुत्थी को समझा है।

आचार्य कृपलानी का स्वभाव में बहुत सी विरोधी भावनाओं का सामञ्जस्य होगया है। साधारण बातचीत और काम काज में वह जितने सरल हैं कर्त्तव्य पालन में और सिद्धान्तिक रूप मे वह उतने ही उग्र हैं। एक ओर उनका जीवन, उनके विचार जितने काव्यमय सरस हैं, दूसरी ओर कॉंग्रेस आफिस के रूखे कार्य करते भी उन्हें कोई अड़चन नहीं होती है। मंच पर भाषण देते हुए जितना वह जनता को हंसा सकते हैं उतना ही जोश भी दिला सकते हैं।

उनकी संगठन शक्ति का परिचय अ० भा० कांग्रेस के महामंत्रित्व के अलावा मेरठ गाँधी आश्रम से हो सकता है जहाँ के आप संस्थापक है वर्षों संचालक रहे हैं और इस समय भी उसके ट्रस्टी है। जिस समय कुछ चुने हुए थोड़े से साथियों के साथ आपने मेरठ के एक मामूली बाग मे बिना रूपये पैसे के इस विशाल संस्था की नींव डाली थी उस समय कौन जानता था कि इस बीज का इतनी जल्दी ही इतना विशाल और स्थाई वृक्ष जनता के सामने आयेगा। कृपलानी जी ने अपनी अद्भुत कार्य क्षमता से थोड़े दिन में ही उस संस्थायें की नींवें पाताल को पहुंचादी थी। सन् १९४२ के आन्दोलन में सरकार ने

इस संस्था को सारे आन्दोलन में शक्ति पहुंचाने वाला बहुत बड़ी बौयलर समझ कर इसे नष्ट करने में अपनी सारी शक्ति लगादी थी, और इसमें कोई सन्देह भी नहीं व्यापार, सिद्धान्त और राष्ट्रीयता, का जो सामाञ्जस्य गांधी आश्रम मेरठ में देखने को मिलता है सारे भारत में उसकी कोई मिशाल नहीं है। जब जब स्वतंत्रता आन्दोलन में अवसर आया है इस संस्था के ८० प्रतिशत व्यक्ति जेल गये हैं, आन्दोलन में उन्होंने क्रियात्मक भाग लिया है, कष्ट सहे हैं, डंडे और गोलियाँ खाई हैं। एक प्रकार से इसकी हर शाखा और दुकान उस शहर के राष्ट्रीय कार्यों का केन्द्र रही है। इसकी विभिन्न दुकानों को आग लगाई लूटा गया, सरकारी ताले डाल दिये गये और पुलिस और फौजों के कैम्प बना दिये गये। पर राष्ट्रीय भावनाओं की तरह अवसर आते ही यह संस्था फिर अपने दूने वेग और शक्ति से राष्ट्र के सामने आ खड़ी हुई है।

एक हिंसा से स्वतंत्रता प्राप्ति में विश्वास रखने वाला, उम नवयुवक कैसे कट्टर अहिंसक बन गया है, किस मंत्रबल से कम्युनिष्ट और समाजवादके सिद्धान्त मानने वाला व्यक्ति समझमें आतेही गांधीजीका भक्त ही नहीं बल्कि पक्का गांधी

वादी बन गया इसका सबको आश्चर्य होता है। गांधी जी के सबसे प्रिय व्यक्तियों और गाँधीवाद के कट्टर अनुयाइयों की सूची सामने आते ही आचार्य कृपलानी का नाम बहुत ऊपर दिखाई देता है, गांधी जी के रचनात्मक प्रोग्राम में कृपलानी जी न केवल पूर्ण विश्वास रखते हैं बल्कि उसे क्रियात्मक सहयोग देने के लिए भी सदैव तैयार रहे हैं और रहते हैं, गांधी जी को वह बहुत प्यार करते हैं, उनकी प्रत्येक आज्ञा उनके लिए देवज्ञा है पर फिर भी वह उनके अन्ध भक्त नहीं है। गांधी जी के लिए वह सबके ऊपर गदा उठाने को तैयार रहते हैं पर स्वयं गांधी जी से किस पर लड़ते झगड़ते हैं यह निकट सम्पर्क में रहने वाले व्यक्ति अच्छी प्रकार जानते हैं। गांधी जी के आराम और स्वास्थ्य के लिए वह स्वयं गांधी जी को भी गाली देने और धमकाने में नहीं चूकते हैं दूसरों की तो बात ही क्या है।

कृपलानी जी का जन्म हैदराबादके एक प्रसिद्ध सिन्धी अमिल परिवारमें १८८८ ई० में हुआ है। आप सात भाई थे और केकी नामक बहुत ही प्यारी, बहिन है जो इस समय भी राष्ट्रीय कार्यों में अपना जीवन लगाये हुए हैं। सातों भाइयों का सारा परिवार ही अद्भुत व्यक्तियों का समि-

भरण कहा जा सकता है। आपके दूसरे और पांचवे भाई मुसलमान हो गये, उनमें से एक ने खिलाफत आन्दोलन में अफगानिस्तान से भारत पर आक्रमण करवाने की कोशिश की और उसी में काम आये। दूसरों ने युनान के मुकावले में टर्की रक्षा करते हुये अपनी जान दे दी इस प्रकार यह दोनों ही इस्लाम की बेदी पर कुर्बान हो गये। तीसरे भाई ने अदिल जाति में क्रान्ती करने के बिचार से हैदराबाद में स्वदेसी चमड़े के जूते की दुकान खोली आप पहिले अमिल थे जिन्होंने जूतों का कार्य किया जो अछूतों का कार्य समझा जाता है। एक भाई ने बढ़ई का कार्य आरम्भ किया पीछे से कट्टर सन्यासी हो गये। कृपलानी जी अपने जीवन मे कहते हैं उन्ही से सबसे अधिक डरते थे। प्रायः सभी भाई एक ही प्रकार के चेहरे मोहरे और डील डौल के थे।

आपके पिता काका भगवान दास रिटायर्ड तहसीलदार थे वह कट्टर बैष्नव थे और वृद्धावस्था में वैरागी जीवन व्यतीत करते थे तथा पक्के मकान के सामने फूंस की झोपड़ी में रहते थे। गांव के सभी लोग उनका बड़ा आदर करते थे और पास-पड़ोस के झगड़े तय करने में वह पंच रहते थे। उनके क्रोध से सब डरते थे उनका स्वभाव उग्र

और जबान तेज थी बुढ़ापे में भी उनके हृदय में उत्साह और कार्यों का आवेश रहता था।

कृपलानीजीने मैट्रिक हैदराबादमें ही पास किया और फर्स्ट ईयर बम्बई के विलसन कालेज से। आपको स्कूली पुस्तकों से बड़ी घृणा थी, पढ़ने में आप कभी परिश्रम नहीं किया करते थे उनका कमरा अधिकतर काव्य-पुस्तकों और उसमें भी अंग्रेजी कवियों की रचनाओं से भरा रहता था फिर भी अपनी कुशाग्र बुद्धि और तकदीर के बल पर कृपलानी जी सदैव पास हो जाया करते थे। कृपलानी जी का स्वभाव भी आरम्भ से ही उग्र था और उनमें स्वाभिमान की मात्रा बहुत अधिक थी हालां कि विद्यार्थी अवस्था तक आप में राष्ट्रीय भाव उत्पन्न नहीं हुए और अधिकांश सिंधी नव-युवकों की तरह आप रेशमी कपड़े कोट पतलून पहनना पसन्द करते थे। पर हिन्दुस्तानी होने के नाते आप हिन्दु-स्तानियत का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकते थे इसीलिए डा० मैकिनान वाले मामले में आपने विलसन कालेज बम्बई छोड़ दिया और डे० जो० कालेज करांचीमें दाखिल हो गये। पर यहाँ पर भी प्रेसीडेन्ट जैक्सन ने विद्यार्थियों की आम सभा में जब "तुम हिन्दुस्तानियों, घृणित, झूठे हो" तो आपका खून खौल उठा और आपने

अन्य विद्यार्थियो के साथ उस समय हड़ताल की जब विद्यार्थियों द्वारा ऐसी हड़ताल करना अनोखी बात थी और राष्ट्रीयता का नाम ही नहीं था यह १६०७ की बात है। भावुक कृपलानी ने अंग्रेजों के प्रति कट्टरता उसी समय से आरम्भ हुई जो अवसर पाकर बढ़ती चली गई और जिसने आज काव्य भक्त कृपलानी को विद्रोही नेता कृपलानी बना दिया। उस समय से ही उन्होंने विद्रोही विद्यार्थियों का एक गुट्ट बना लिया जिसके साथ वह हमेशा मीटिंगों और सभाओंमें जाते थे और सरकार परस्तों और गौरांग महाप्रभु के भक्तों और उनकी स्तुति करने वालों की खूब खबर लेते थे, जब वह लोग तर्क से नहीं मानते थे तो इतना गुल गपाड़ा करते थे कि वक्ताको चुप हो जाना पड़ता था। इन सब घटनाओंने कृपलानीजीकी शिक्षा वहीं समाप्त कर दी पर आपने १६४२ में एम. ए. कालिया और अब वह विद्यार्थी से मास्टर हो गए पर उनका पैर कहीं भी नहीं टिक सका, अपने स्वभाव के कारण आप विद्यार्थियों के प्रेमी हो जाया करते थे और उनके लिए अधिकारियोंसे झगड़ते थे, पर पुराने जमाने के वह अधिकारी जो डंडे से विद्यार्थियों को पढ़ाना और समझाना चाहते थे यह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे कि कोई प्रोफेसर विद्यार्थियों के और

उनके बीच में विद्यार्थियों का पक्ष लेकर आये। इसलिए दस वर्ष तक आप विभिन्न स्कूलों और कालेजों में पढ़ाने का कार्य करते रहे इस बीच आप मुजफ्फरपुर और बिहार में भी रहे। हर स्थान पर उनके पढ़ाने का तरीका किताबी नहीं बल्कि वक्ता की तरह लच्छेदार भाषा और हंसी मजाक के साथ विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान करा देना है वैसे भी विद्यार्थियों के साथ घुले मिले रहना, उन्हें बहुत पसन्द है उनके साथ खेलना, दौड़ना, पेड़ों पर चढ़ना, तैरना कविताएं गाना उन्हें बहुत भाता है इसी लिए विद्यार्थी उनसे बहुत स्नेह करते हैं।

कृपलानी जी सदैव ही बहुत चतुर वक्ता रहे हैं वह अपनी बात को बहुत सीधे सादे ढंग से जनता के सामने रखते हैं अपनी काव्यमय भाषा और मुसकराहट में वह श्रोताओं को बहा ले जाते हैं पर कभी कभी उनके हृदय की गर्मी ऊपर निकल पडती है जो उन्हें स्वयं भी जोश में ला देती है और उससे उनकी भाषा और उनके श्रोता भी जोश में आ जाते हैं। अपने विरोधी को दलीलें देकर अपने विचार का बना लेना उनके लिए बहुत आसान है। उनकी दलीलें इतनी अकाट्य आँकड़े इतने सही होते हैं कि विरोधी को चुप हो जाना पड़ता है।

परिस्थितियों और निरन्तर लड़ते रहने वाली भावनाओं ने उन्हें गम्भीर बना दिया है और यकायक देखनेवाला व्यक्ति उनके तने हुए चेहरे को देखकर उन्हें बड़ा क्रोधी और गम्भीर व्यक्ति समझेगा पर वास्तव में बात ऐसी नहीं है। उनके चेहरे की बनावट ही ऐसी है और फिर वह बहुत शीघ्र मुस्करा भी उठते हैं, कहा जाता है कांग्रेस वर्किंग कमेटी में वह सबसे कम बोलने वाले सदस्य हैं पर जिम्मेदारी सबसे अधिक उन्हीं की रहती है, सारी जानकारी उन्हें रखनी पड़ती है सारे तथ्य और आँकड़े वह पेश करते हैं और तरमीम के लिए प्रस्तावों के मसौदे भी उन्हें स्वयं बनाने पड़ते हैं। पर फिर भी वह विनोदप्रिय हैं वर्किंग कमेटी के कार्यकर्ताओं में भी वह एक फुलझड़ी स्वयं छोड़ देते हैं और स्वयं तथा साथियों को सबको हँसी से लोट पोट कर देते हैं।

उनका जीवन बहुत साधा सादा है वह फिजूल खर्ची को बुरा समझते हैं और ठाट बाट के रहन सहन से उन्हें घृणा है. अपने प्रान्त वासियों के दकियानूसी ख्यालात, पश्चिमी ढंग के रहन सहन और पोशाक से प्रेम और फजूल खर्ची उन्हें बहुत खटकती है और जब जब आप सिन्धियों के बीच में होते हैं उन पर कटाक्ष करने में नहीं

चूकते हैं।

कृपलानी जी को संयुक्त प्रान्त, बिहार और गुजरात में अधिक रहने का इत्तिफाक हुआ है सिन्ध उनका प्रान्त है ही अतः उनकी भाषा खिचड़ी हो गई है। गुजराती आप टूटी फूटी बोलते हैं और हिन्दुस्तानी अटक अटक कर, पर राष्ट्र भाषा होने के नाते वह इसी को पसन्द करते हैं और इसी में खूब बातचीत करते हैं।

अपनी प्रोफेसरी के आरम्भिक दिनों में आप क्रान्तिकारी रहे हैं और हिंसा से स्वतंत्रता प्राप्त करने में आपका विश्वास रहा है उन्हीं दिनों कम्युनिष्टवाद की जो हवा सारे भारत में फैली थी उसने आपको भी प्रभावित किया था पर १९१७ में जब गाँधी जी चम्पारन गये और बिहार में ही होने के कारण आप गाँधी जी के सम्पर्क में आये तो वह सब विचार धीरे धीरे लोप होते गये और आप कट्टर गाँधीवादी और वह भी तर्कशील और समझदार गांधीवादी बन गए तब से आज तक विभिन्न वादों की बहुत सी हवायें देश में आई पर आप अटल रूप से उनके बीच में खड़े ही नहीं रहे बल्कि गांधीवाद के रक्षक बन तर उनका मुकाबला करते रहे।

———

गांधी जी के साथ कृपलानी जी

कृपलानी जी बचपन से ही जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है विद्रोही स्वभाव और रचनात्मक कार्य में विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। बीसवीं सदी के द्वितीय दशाब्द में ही जब कि अधिकांश भारतवासी न राष्ट्रीयता जानते थे और न रचनात्मक कार्य का महत्व समझते थे। आप सिन्ध में सामाजिक सुधार, शिक्षा और राष्ट्रीयता प्रचार का काफी कार्य कर चुके थे और मुजफ्फर पुर में प्रोफेसर रहते हुए भी करीब दो हजार मील की दूरी पर सिन्ध में आप का वह सब कार्य बराबर चल रहा था और आप उसके संचालक थे। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में प्रथम परिचय के सम्बन्ध में जो जो नोट कृपलानी जी के बारे में दिया है वह कृपलानी जी के लिये सर्वश्रेष्ठ सर्टीफिकेट है। गांधी जी लिखते हैं—"मुजफ्फरपुर में उस समय आचार्य कृपलानी रहते थे, उन्हें मैं पहचानता था जब मैं हैदराबाद (सिन्ध) गया था तब उनके महा

त्याग की, उनके जीवन की और उनके हृदय से चलने वाले आश्रम की बात डाक्टर चौइथराम के मुख से सुनी थी।"

गाँधी जी बिहार में प्रसिद्ध चम्पारन काण्ड के सम्बंध में गये थे वहाँ के गोरांग सरमायेदारों ने भोले भाले बिहारी किसानों पर मनमाने अत्याचार किये थे और निरन्तर कर रहे थे, उन्होंने वहां जाकर किसानों की दुर्दशा और अत्याचारियों का जो अत्याचार देखा तो अपने स्वभावानुसार वह अत्याचारियों से भिड़ने को तैयार हो गए। उस समय अपरिचित होतेहुए भी जिन साथियों ने उस कार्य में उनका खूब सहयोग दिया उनमें आचार्य कृपलानी का भी नाम था। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में आचार्य कृपलानी के बारे में जो चम्पारन सम्बन्धी नोट लिखा है उसकी कृपलानी जी की नियंत्रण प्रियता और विनोदी स्वभाव का ठीक अन्दाज़ा लग जाता है। गांधी जी लिखते हैं—"इसमें अध्यापक कृपलानी भला शामिल हुए बिना कैसे रह सकते थे, सिन्धी होते हुए भी वह बिहारी से भी अधिक बिहारी हो गए थे। मैंने ऐसे थोड़े सेवकों को देखा है जो जिस प्रान्त में जाते हैं वहीं के लोगों में दूध शक्कर की तरह घुल मिल जाते हैं और किसी को यह नहीं मालूम होने देते कि यह गैर प्रान्त के

हैं। कृपलानी इनमें से एक हैं। उनके जिम्मे मुख्य काम था द्वारपाल का। दर्शन करनेवालों से मुझे बचा लेने में ही उन्होंने उस समय अपने जीवन की सार्थकता मान ली थी। किसी को हँसी दिल्लगी से और किसी को अहिंसक धमकी देकर वह मेरे पास आने से रोकते थे। रात को अपनी अध्यापकी शुरू करते और तमाम साथियों को हँसा मारते और यदि कोई डरपोक आदमी वहां पहुंच जाता तो उसका हौसला बढ़ाते।"

कृपलानी जी ने इस अवसर पर गांधी जी की व्यक्तिगत जितनी सेवा की आने जाने वालों से उन्हें कितना बचाया इसका अन्दाजा इस बातसे लग जाता है कि इसीसे प्रभावित होकर गांधी जी ने अपने १९२७ के युक्त प्रान्त के दौरे में कृपलानी जी को ही अपना प्रोग्राम सौंप रक्खा था।

कृपलानी जी बनारस में

चम्पारन काण्ड की जांच में गांधी जी के कार्य में पूरा सहयोग देने को कलकत्ता विश्वविद्यालय, जिसके मातहत मुजफ्फरपुर कालेज कैसे बर्दाश्त कर सकता था अतः आपने कालेज छोड़ दिया और आप हिन्दू कुल भूषण महामना पं० मदन मोहन मालवीय के पास बनारस आ गये और उनके व्यक्तिगत मंत्री की हैसियत से सामाजिक राजनैतिक कार्य करते रहे।

यह आश्चर्य की बात है कि कहाँ धर्मप्राण मालवीय जी और कहां धर्म की छाया से भी भागने वाले कृपलानी जी मालवीय जी की रोम रोम में धर्म और धार्मिक विश्वास समाया हुआ है जबकि कृपलानी जी को धर्म और धार्मिक संस्कारों से वैसे ही चिढ़ है, वैसे भी सिन्धी लोग आम तौर पर धर्म कर्म के बन्धन कम मानते हैं फिर भी कृपलानी जी मालवीय जी के साथ रहे।

मालवीय जी के प्राईवेट सिक्रेटरी शिप से कृपलानी जी काशी विश्व विद्यालय में राजनीति के प्रोफेसर हो गये और असहयोग आन्दोलन के दिनों तक वहीं रहे। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है कृपलानी जी धीरे धीरे गांधी जी के ज्यों ज्यों सम्पर्क में आते गए उनका साहित्य पढ़ते गए त्यों त्यों उनका विश्वास रचनात्मक प्रोग्राम में बढ़ता गया और यहां तक कि उन्होंने असहयोग के दिनों में ही बनारस में गांधी आश्रम की स्थापना की और खद्दर तथा चर्खे का प्रचार किया।

साबरमती आश्रम में

उन्हीं दिनों गाँधी जी ने अपने सारे कार्यों का केन्द्रीकरण करने के उद्देश्य से और रचनात्मक कार्य में विश्वास रखने वाले शिक्षित कार्यकर्ता तैयार करने के लिए अहमदाबाद के पास साबरमती आश्रम स्थापित किया उसमें कृपलानी जी को शिक्षा विभाग के आचार्य बनाकर बुलाया। वहां आप १६२७ तक सफलता पूर्वक कार्य करते रहे।

चर्खा संघ में

महात्मा गाँधी खद्दर और चर्खे को स्वतन्त्रता प्राप्ति

और संगठन का अचूक अस्त्र समझते रहे हैं, इसलिए इस कार्य को व्यवस्थित करने के लिए अ० भा० चर्खा संघ नामक संस्था स्थापित की हुई है, उसका धीमी गतिसे चल रहा था उसके कार्य को प्रगति देने के लिए और अधिक उत्साही और योग्य कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता थी अतः गाँधी जी ने कृपलानी जी को उस कार्य में योग देने का आदेश किया।

कृपलानी जी जीजान से उस कार्य में जुट गए और उन्होंने महाकोशल, संयुक्त प्रान्त और देहली प्रान्त के कार्य को हाथ में लिया। बहुत थोड़े दिन में ही आपने इस कार्य को बहुत व्यापक और विशाल बना दिया आज चर्खा संघ का जो विशाल रूप दृष्टि गोचर हो रहा है उसका अधिकांश श्रेय कृपलानी जी को है।

विज्ञापन से दूर

आचार्य कृपलानी आत्म विज्ञापन से बहुत अधिक बचते हैं, कांग्रेस वर्किंग कमेटी शायद वहीं ऐसे सदस्य जिनमें सबसे कम पत्रों और पुस्तकों के रूपमें लिखा गया है। भारत के अधिकांश पत्रकार भी उनके पूरे नाम जीवटराम भगवानदास को नहीं जानते हैं ना ही उन्हें यह मालूम है कि गांधी जी ने अपनी आत्म कथा में जिन

गिरधारी लाल नामक व्यक्ति का ज़िक्र किया है और कोई नहीं हमारे यही आज के राष्ट्रपति कृपलानी हैं।

मद्रास के एक पत्र ने उन्हें अभी हाल में ही द्वितीय श्रेणी का लीडर कहा है पर उस पत्र कार को शायद यह बात मालूम नहीं है कि कृपलानी जी भारत के द्वितीय श्रेणी के नहीं प्रथम श्रेणी और यदि उससे भी कोई ऊंची श्रेणी हो तो उनके नेता हैं। देश ने राष्ट्रपतित्व की बागडोर वैसे ही उनके हाथ में नहीं सौंप दी है बल्कि तीन वर्ष की कठिन साधना, प्रत्येक अवसर पर दिखाई गई अपनी अद्भुत प्रतिभा और योग्यता ने उन्हें यह स्थान दिलाया है।

बहुत थोड़े व्यक्ति यह बात जानते हैं कि अपने कांग्रेस के महासमित्व काल में सैद्धान्तिक बातों को लेकर आपने तीन बार अपने पद से स्तीफा दिया है पर हर बार वह स्वीकार नहीं हुआ है और देश ने हर बार यह देखा है कि जिस बात को लेकर कृपलानी जी ने स्तीफा दिया है अन्त के वह बात ठीक प्रमाणित हुई है। वास्तव में कृपलानी जी बहुत सिद्धान्तवादी व्यक्ति हैं जो सिद्धान्त के लिये सब कुछ त्याग सकते हैं। सच पूछा जाय तो कृपलानी जी ने अपने जीवन का उत्कृष्ट भाग कांग्रेस के रचनात्मक

कार्यक्रम को पूरा करने और संगठन को मजबूत बनाने में लगा दिया है। कृपलानी जी सदैव ही नेता गिरी से दूर रहे हैं और इसी कारण कांफ्रेंसों और अधिवेशनों के सभापतित्व से वह बचते ही रहे हैं। मुझे व्यक्ति गत रूप से ज्ञात है कि एक बार देहरादून जिले की कांफ्रेस का सभापतित्त उन्होंने कितने आग्रह और दवाब से स्वीकार किया था। अपने सार्वजनिक जीवन के तीस वर्षों में से उन्हें शायद सार्वजनिक मान पाने के सबसे अधिक अवसर आये हैं पर उन्होंने सदैव ही उससे दूर रहना अच्छा समझा और वह अवसर दूसरे व्यक्तियों को भेंट कर दिये हैं। सचनुच ही कृपलानी जी के जीवन के बारे में जन-साधारण अधिक कुछ नहीं जानता है और यह कितने आश्चर्य की बात है कि जो व्यक्ति आज हमारे राष्ट्र-पति के पद पर निर्विरोध चुना है राष्ट्र उसको केवल अब तक कॉंग्रेस का मन्त्री ही समझता रहा है।

विवाह और गृहस्थ

अपने जीवन के उस भाग में जब कि प्राचीन भारत-वासी गृहस्थ धर्म त्याग दिया करते थे कृपलानी जी ने अपने से आयु में बीस वर्ष छोटी पत्नी से शादी की। पर अपने जीवन के वैवाहिक नौ वर्ष में यह जोड़ा जिसका

सुखी और सन्तुष्ट रहा है, शायद भारत के बहुत ही कम युवक दम्पति इतने सुखी रहते हों।

श्रीमति सुचेता कृपलानी एक सम्भ्रान्त, सुसंकृत बंगाल परिवार की कन्या हैं। उन्होंने किस प्रकार अपने विचार अपना रहन सहन और वेश भूषा अपने पति के अनुकूल बनाली है वह एक हिन्दु परिवार के कन्या के अनुरूप ही है। सुचेता जी के व्यक्तित्व का ही यह प्रभाव है कि एक आदर्शवादी, गांधीवाद का पुजारी व्यक्ति उनपर अनुरक्त हो गया। सुचेता जी स्वभाव से नम्र, सभ्य और बुद्धिमान युवती है उन्होंने अपने बहुत थोड़े दिन के कार्य से ही अपनी योग्यता प्रकट कर दी है। श्री मती कस्तूर बा स्मारक ट्रस्ट के रूप में कार्य करके उन्होंने अपने आपको एक बड़ी सफल संयोजक और संगठन कर्त्ता प्रमाणित कर दिया है। कांग्रेस कार्य में सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं में उनका प्रथम स्थान हो गया है।

श्रीमती सुचेता कृपलानी एक आदर्श गृहणी हैं और जब यह युगल दम्पत्ति जेल या दौरे पर होकर घर पर होते हैं वे उस समय इनके गृहास्थिक सुख का अन्दाज लगाया जा सकता है, एक आदर्श गृहणी की तरह सुचेता जी इस बात का सदैव ध्यान रखती है कि कृपलानी जी

को हर प्रकार का सुख सुविधा और आराम पहुंचाया जाए। आश्रमवासी और गांधी वादी होने के कारण कृपलानी जी स्वावलम्बिक जीवन बिताना पसन्द करते हैं अतः स्वयं भोजन बनना और कपड़े धोना उन्हें पसन्द है पर जब वह घर पर होते हैं सुचेता जी यह दोनों कार्य स्वयं करती हैं और कृपलानी जी को छूने भी नहीं देती हैं। सुचेताजी लजीज खाना बनाने का जिसके कृपलानी जी आदी है बहुत ध्यान रखती हैं। इसी प्रकार भोजन के बाद कृपलानी जी की आदत के अनुसार वह काफी का एक कप और धूम्रपान का सामान भी उनके पास जुटाना कभी नहीं भूलती हैं। कृपलानी जी खाना हाथ से न खाकर फोर्क से खाते हैं अतः यह कभी नहीं होता है कि उनकी थाली बिना फोर्क उनके सामने आ जाय।

वैसे कृपलानी जी बहुत सादगी पसन्द हैं पर वह सफाई बहुत पसन्द करते हैं, सुचेता जी इस बात को जानती हैं और यदि आप उनके ड्राईंग रूम में जायें तो वहां आप वस्तुओं की सफाई और उनका व्यवस्थित रूप देखकर दंग रह जायेगें। निसन्देह वहां आपको कीमती और दिखावटी सामान नजर नहीं आयेगा पर फिर भी समान की सुरुचि और सुसंस्कृत पूर्ण चुनाव और उसके

यथा स्थान सजावट में आप कोई त्रुटि नहीं पायेंगे। उनके ड्राईंग रूम में हल्का कुर्सियों का जोड़ा और विशेष प्रकार का सिन्धी ढंग का फर्नीचर दिखाई देगा खास तौर पर झूले के आकार का पलंग के स्थान पर पीनगोह। पीनगोह कृपलानी जी को बहुत पसन्द है उस पर बैठकर झूलते हुए पढ़ना या बातचीत करना उनके शौक की वस्तु है।

कृपलानी जी का स्वभाव

कृपलानी जी प्रातः जल्दी उठ बैठते हैं और बिस्तर पर ही बिना हिले डुले और बातचीत किये करीब आधा घंटा बैठे रहते हैं, उसके बाद दैनिक कार्यों से निबट कर अपने कार्य में लग जाते हैं। वह एक मिनट भी खराब नहीं करते हैं यदि किसी समय कोई मिलने वाला भी न हो और कोई प्रोग्राम भी न हो तो आप फौरन लिखने बैठ जाते हैं। और बिना किसी बाधा के घंटो लिखते रहते हैं।

यदि कभी उनके बचपन का कोई साथी या मित्र मिलने आ जाता है तो अपने विनोद प्रिय स्वभाव के अनुरूप आप घंटो उसे भी हँसाते रहेंगे और स्वयं भी हंसते रहेंगे उनके साथ घूमने चले जायेगें और घंटो पार्कों आदि में

प्राकृतिक दृश्य देखते हुये घूमाते रहेंगें। आपकी लिखी हुई अनेक पुस्तकें और लेख स्वराज भवन की उस नीची खिड़की के सामने बैठ कर ही लिखे गये हैं जो आपके स्वराज भवन वाले मकान में है। आपकी 'दी गाँधी यनवे' और "दी लैटेस्ड फेज" नामक दो पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं।

आपका प्रिय खेल बैडमिन्टन है जिसे आप रोजाना संध्या को सुचेता जी के साथ खेलते हैं और उनके हारने जीतने पर तीखा मजाक करने में कभी नहीं चूकते हैं। दूसरा शौक जो आप अहमद नगर किले के ३ साल के प्रवास में लेकर आये हैं चौसर है। आपका सबसे बड़ाशौक काव्य और गाना है। संध्या का अकसर समय आप सुचेत जी के सुललित स्वर से गाना सुनने में बिताते हैं कभी कभी प्रसिद्ध सिन्धी कवि सूफी शाह अब्दुल लतीफ की कवितायें आप स्वयं भी गुन गुनाते हैं। गीता के बाद जिस पुस्तक को आपने अनेकों बार पढ़ा है मनन किया है वह "शाह जी रसालो" नामक शाह अब्दुल लतीफ की सिन्धी कविताओं का संग्रह है।

कृपलानी जी का स्वभाव के उग्र और स्पष्ट वक्ता हैं, कुछ लोग उन्हें स्वेच्छाचारी होने का दोष भी देते हैं पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह जिस बात में विश्वास

करते हैं उसमें तन्मय हो जाते हैं उनके लिये फिर वह बड़े से बड़े व्यक्ति का विरोध करने में भी नहीं चूकते हैं। यह अहिंसा के पुजारी होते हुये भी मांस खाते हैं और अपनी इस कमजोरी को खुले आम कहते हैं। वैसे उनका स्वभाव आध्यात्मिक सा है और उनका रहन सहन बहुत सादा है उन्होंने अपनी आवश्यकतायें बहुत घटा रखी हैं पर तो भी वह स्वादिष्ट भोजन करने के आदि हैं।

आपके भाषण और बोल चाल बहुत साधारण भाषा में तथा व्यवहारिक होते है उनमें मौलाना आजाद का काव्य मय धारा, प० जवाहर लाल नेहरू के ऊचे ख्यालात और लौह पुरुष सर्दार बल्लभ भाई पटेल की ठोस योजनायें तो नही होती पर फिर भी वह श्रोता को अपने साथ बहा ले जाते हैं। कांग्रेसी हलकों में और आम जनता में उनकी स्पष्ट वादिता प्रसिद्ध है यह आदत उनके बचपन से ही उन्हें अपने सिन्धी प्रान्त से और श्रद्धेय पिता जी से विरासत में प्राप्त हुई है एक बार सक्खर में जब आप एक स्कूल में मास्टर थे तो एक अंग्रेज इन्सपेक्टर स्कूल का मायना करने आये। उन्होंने आते ही लड़कोंसे कुछ सवाल किये, अंग्रेज को देखकर लड़के घबरा गये इस पर आपने सिन्धी भाषा में उन विद्यार्थियों से कहा कि तुम लोगे

घबरा क्यों गये हो, यह कोई जंगली जानवर नहीं है जो तुम्हें खाजायेगा, यह बड़े शर्म की बात है कि तुम उससे इस लिये घबरा रहे हो कि वह एक अंग्रेज है" इस पर आपसे उस अंग्रेज इन्सपेक्टर ने पूछा कि आप लड़कों को क्या बहका रहे हैं। आपने जो कुछ कहा था उसका शब्दशः अनुवाद करके इन्स्क्टर को सुना दिया इस पर उसने आपके विरुद्ध बहुत सख्त रिपोर्ट लिखी और हैड-मास्टर से आपसे जवाब तलब करने को कहा। हैडमास्टर ने कहा कि आप इस व्यक्ति को जानते नहीं हैं हम इससे जवाब तलब नहीं कर सकते।

इसी प्रकार जब मुजफ्फरपुर में प्रोफेसर मलकान और कृपलानी जी से गांधी जी को ठहराने और उनके साथ काम करने की बात वहां के कालेज अधिकारियों ने की, जिसमें आप प्रोफेसर थे तो आपने फौरन ही वहां से स्तीफा दे दिया।

अभी पूर्वी बंगाल में मुस्लिम लीग की एक्शन डे प्रोग्राम और साम्प्रदायिक प्रचार नीति के कारण जो नर-मेध यज्ञ हुआ और आप उसकी जांच को कांग्रेस कार्य समिति की आज्ञानुसार गये तो आपने अपनी जांच की रिपोर्ट बहुत स्पष्ट शब्दों में बिना इस बात की चिन्ता

किये कि मुसलमान नाराज होंगे या प्रसन्न; देश के सामने प्रस्तुत कर दी. इसमें कोई सन्देह नहीं आप पहिले कांग्रेस नेता हैं जिन्होंने मुसलमानों की नाराजी की पर्वाह न करके हिन्दुओं पर होने वाले जुल्मों को खुल्लम खुल्ला सारे संसार के सामने प्रकट कर दिया। जहाँ एक ओर कांग्रेस नेता साम्प्रदायिकता के दोष से बचने के लिये सही बातों को कहते हुए भी घबराते हैं वहाँ आपने प्रान्तीय मुस्लिम लीग के उस प्रस्ताव और वक्तव्य का, जो उसने आपको झूठा और साम्प्रदायिक बनाने के लिये दिया था, मुंह तोड़ उत्तर देकर सारे संसार के सामने मुस्लिम लीग को नंगा खड़ा कर दिया है।

पूर्वी बंगाल के समाचार पाते ही काँग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग की पर्वाह न करते हुए भी आप अपनी जान को जोखिम में डालकर फौरन पूर्वी बंगाल पहुंच गये और वहां के मित्रों के रोकने और खतरा बताने पर भी आप चान्दपुर आदि के लिए फौरन चल पड़े। आपके साथ वृद्ध तपस्वी बा० पुरुषोत्तम दास टंडन स्पीकर युक्त० प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा भी थे वह आपके साहस और शक्ति की आँखों देखी घटना इस प्रकार लिखते हैं—

"शाम को हम कलकत्ता आये। दूसरे दिन आचार्य

कृपलानी और उनकी पत्नी ने उड़कर अन्दर के हल्कों में जाने की ठानी। मुझे आश्चर्य है कि इस दुबले पतले व्यक्ति के अन्दर कितनी स्फूर्ति भरी हुई है। चार दिन के लगातार उड़ने से हम थके हुए थे पर उसका नारा था बढ़े चलो।"

"इस यात्रा में सुचेता कृपलानी ने उनकी बहुत मदद की। जब हवाई जहाज २१ अक्तूबर को कलकत्ता पहुंचा तो मुझे बताया गया कि आगाहों के खिलाफ कृपलानी जी चांदपुर आदि स्थानों के लिए गए हैं।"

श्रीमती सुचेता देवी के सम्बन्ध में टंडन जी लिखते हैं:—

"इन त्रस्त लोगों के लिए सुचेता देवी एक दयामयी बहन के समान थीं, बंगाल की कन्या होने के कारण उन की वेदना को समझ सकती थी और उनको उन्हीं की भाषा में सान्त्वना देती थी इस महान परीक्षा के समय लोगों को उन्होंने धैर्य्य और विश्वास न खोने की राय दी।"

इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता कि राष्ट्र के इस साम्प्रदायिक हत्याकांड के अवसर पर जनसाधारण को जितनी सहायता आचार्य कृपलानी और सुचेता कृपलानी

ने की और उस समय सबसे पहिले उनके पास पहुंच कर उन्हें सान्त्वना दी जब वह अपने आपको अनाथ, निरीह और पंगु समझ रहे थे, उतनी किसी अन्य नेता ने नहीं की। हिन्दू महासभावादी नेता जो खाली कांग्रेस को गाली देते रहते हैं और यह कहते हैं कि कांग्रेस ने हिंदुओं का नाश कर दिया। उनको आचार्य कृपलानी ने एक सबक दिया और प्रमाणित करके दिखा दिया कि हिन्दुओं के दुःख और संकट के समय भी काँग्रेस का सभापति ही वहाँ सबसे पहिले अपनी जान हथेली पर रख कर पहुंचता है।

साथ ही केवल हिन्दुओं के लिए ही नहीं बिहार में मुसलमानों के लिए भी वह सबसे पहिले दौड़कर बिहार गये और वहां मुसलमानों की रक्षा और शान्ति की अपील कर रहे हैं।

श्रीमती सुचेता कृपलानी आज भी पूर्वी बंगाल में पड़ी हुई पीड़ित कन्याओं और स्त्रियों को अत्याचारियों के कब्जे से निकाल कर रक्षा कैम्पों में भेज रही हैं।

मुझे तो ऐसा लगा है कि देश को इस समय ऐसे ही युगल दम्पत्ति राष्ट्रपति की आवश्यकता थी और ईश्वर करे यह बहुत दिन तक राष्ट्र का पथ प्रदर्शन करते रहें। जयहिन्द।

समाप्त

आचार्य कृपलानी ने पूर्वी बंगाल का दौरा करने के बाद जो वक्तव्य दिया है उसके तथ्य निम्न प्रकार हैं:

१–नोआखाली और त्रिपुरा जिलों की हिन्दू जनता पर होनेवाले आक्रमण पूर्व निश्चय के अनुसार तथा लीगी प्रचार के परिणाम थे।

२—अधिकारियों को उपद्रव होने की आशंका की सूचना दे दी गई थी।

३—मुसलमानों को विश्वास हो गया था कि अगर हिन्दुओं के विरुद्ध कुछ किया गया तो सरकार कोई रोक थाम नहीं करेगी।

४—सैकड़ों और हजारों की टोली बनाकर मुसलमान हिन्दु गाँवों और हिन्दू घरों पर जाते और मुसलिम लीग अथवा कलकत्ता काण्ड के मुसलिम पीड़ितों के लिए भारी चन्दा मांगते। कहीं कहीं यह चन्दा १० हजार से भी अधिक मांगा जाता था। चन्दा देने पर भी रक्षा सम्भव

नहीं थी। वही दल या अन्य दल हिन्दू घरों को लूटता। लूट सब तरह की वस्तुओं की होती थी। कहीं कहीं लूट से पहिले घर वालों को धर्म परिवर्तन के लिए कहा जाता था इस पर भी लूट होती ही थी। हिन्दुओं से कहा जाता कि लूट और अग्नि काण्ड कलकत्ते में मुसलमानों की जान का प्रतिशोध है कभी कभी प्रतिरोध न करने वालों को भी गोली से उड़ा दिया जाता था।

५—हताहतों की संख्या की जांच करना सम्भव नही था। एक अफसर ने मरों की संख्या १०० बतलाई दूसरे बड़े अफसर ने उसे ५०० बतलाया। पुलियाराड़ा के निकट क्षेत्र में जाँच करने से ज्ञात हुआ कि वहां लगभग ३०० व्यक्ति मारे गये।

६—लूट मार करने वाले आस पास के गाँव के मुसलमान ही थे। गांव के मुसलमानों ने उनकी सहायता की। बाहर के आदमी कम थे।

७—लूट के बाद भी हिन्दु धर्म परिवर्तन के बाद ही सुरक्षित थे। "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "लड़के लेंगे पाकिस्तान" के नारे की सुफेद टोपी धर्म परिवर्तनका चिन्ह था। स्त्रियों की चूड़ी तोड़ी तथा सिन्दूर मिटा कर धर्म परिवर्तन होता था। उन्हें पीर का कपड़ा छूना पड़ता। पुरुष